Issn 0973-9777
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 6 अंक - 5 सितम्बर-अक्टूबर 2012

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्धयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन
www.anvikshikijournal.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र,इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल,डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. राधा वर्मा, डॉ. प्रभा दीक्षित, डॉ. विशाल अशोक आहेर, डॉ. गीता देवी गुप्ता, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता,

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान),डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1000+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387,

टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail :

maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–6 अंक–5 सितम्बर–2012

शोध प्रपत्र

धर्म, धर्म निरपेक्षता और गाँधी -डॉ. श्रुति दुबे 1-6
क्षत्रपतिचरितम् महाकाव्य में काव्यतत्व[1] का विवेचन -डॉ. मनीषा शुक्ला 7-8

पुराणों में भारतीय एकता एवं अखण्डता की अवधारणा -डॉ. गौरी नाथ राय 9-10
आतंकवाद के परिवेश में असहाय मानवीयता को चित्रित करती हिन्दी-कविता-डॉ. राधा वर्मा 11-14

मध्यकालीन रचनाओं में स्त्री सशक्तिकरण के स्वर : मीरा-साहित्य के संदर्भ में -डॉ. अंशुमाला मिश्रा 15-18
हिन्दी, मराठी भाषा में अपसरण : भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से -अर्चना बलवीर 19-21

महात्मा गाँधी एवं नारी : आधुनिक परिप्रेक्ष्य -डॉ. मनीष कुमार 22-25
सरदार भगत सिंह : एक विचारक के रूप में -डॉ. रामनिवास पटेल 26-28

केन्द्र-राज्य सम्बन्ध : संवैधानिक प्रावधान बढ़ता विवाद व समाधान की दिशा [वित्तीय सम्बन्ध के विशेष संदर्भ में] -
डॉ. श्रीमती अलका मेश्राम एवं डॉ. डी. एन. सूर्यवंशी 29-32
साम्प्रदायिकता एवं राजनैतिक स्वार्थ : एक अवलोकन -राजेश स्वराज 33-36

बिरसा मुंडा धर्म का विस्तार एवं वर्तमान स्वरुप -मनोज कुमार सिंह 37-41
विदेशों में सूर्योपासना की समीक्षा -खगेश नाथ गर्ग 42-45

सम्राट हर्ष की कन्नौज धर्म महासभा का समग्र विवेचन -मनोज कुमार सिंह 46-49
भारतीय समाज में स्त्रियों की प्रस्थिति : एक ऐतिहासिक अनुशीलन -कंचन स्वराज 50-52

काशी का सांस्कृतिक इतिहास -डॉ. विनय कृष्ण आर्यन 53-56
भारतीय अर्थव्यवस्था के उतार चढ़ाव के दौर का चित्रण -डॉ. सीमा कुमारी 57-60

बिहार में कृषि आधारित उद्योगों की समस्या एवं सम्भावना -डॉ. विनोद कुमार मिश्र 61-63
मानवाधिकार एवं महिलायें -डॉ. मनीषा आमटे 64-65

छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या और पुलिस प्रशासन, चुनौतियाँ एवं समाधान -
डॉ. श्रीमती अलका मेश्राम एवं डॉ. डी. एन. सूर्यवंशी 66-71
झारखण्ड आन्दोलन की सामाजार्थिक पृष्ठभूमि -मुन्ना लाल गुप्ता 72-75

महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों की समीक्षा -प्रतिमा पटेल 76-79
वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों की उपादेयता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन -
नवीन कुमार 80 85

उन्नाव जिले में प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत मध्यान्ह भोजन एवं नि:शुल्क पुस्तक वितरण कार्यक्रम पर विवेचना -
अमरेश कुमार 86-89
अनाथ एवं अंगीकृत बच्चों का उनके व्यक्तित्वगत गुणों पर प्रभाव -मनीष कुमार चौहान 90-93

छात्राओं के शिक्षा एवं समाजीकरण में परिवार की भूमिका -डॉ. कल्याणी 94-96
ध्रुपद परम्परा : नादात्मक अनुशीलन -विशाल जैन 97-99

किशोरापराध का मनोवैज्ञानिक कारण एवं निवारण -काव्या वर्मा 100-102
अस्तित्ववाद और मानववाद -प्रज्ञा तिवारी 103-105

রবীন্দ্র নাট্যভাবনা : পূর্ণের পদধ্বনি - ড. নমিতা ভট্টাচার্য ১০৬-১১৮

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2012) **6,106-118**
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777 प्रकाशनार्थ स्वीकृत 20 जुलाई 2012

রবীন্দ্র নাট্যভাবনা : পূর্ণের পদধ্বনি

ড. নমিতা ভট্টাচার্য

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित रवीन्द्र नाट्यभावना : पूर्णेर पदध्वनि शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र की लेखिका मैं नमिता भट्टाचार्य घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

রবীন্দ্রনাথের নাটকে জীবনের ঘটনার দিকটি গল্পে, হৃদয়ের দিকটি চরিত্র এবং মস্তিস্কের দিকটি বা ভাবের শুদ্ধ রূপটি ভাবনায় প্রতিষ্টিত সমকালীন ভারতীয় বা আন্তর্জাতিক জীবন সমস্যার বিচার বিশ্লেষণ যুগ-মানসিকতার স্বরূপ নির্ণয় চরিত্রগুলিকে গভীরতা দান করেছে।

সংসারের জমি থেকে উৎপাটিত প্রেমের বিকৃতি ঐহ্যিক সুখ সর্বস্বতার করুণ পরিণতি 'রাজা রাণী'তে। বাস্তবকে অস্বীকার করে অসীমের ব্যর্থ সন্ধান 'প্রকৃতির প্রতিশোধ'-এ পৈশাচিক প্রথা সর্বস্বতায় অন্ধধর্মাচারের মূঢ়তা বিসর্জনে-এ। পুঁথিগত জীর্ণ লোকাচার বা জড়শক্তির পেষণে তাৎপর্যহীন শিক্ষা ও মুমুর্ষপ্রাণ বা চৈতন্যশক্তির বন্ধনমুক্তির আর্তি দুই বর্ণে সংগ্রাম 'অচলায়তন'-এ লৌকিক ধর্ম সংকীর্ণতার উপর প্রেম ধর্মের উদার অভ্যুদয় 'মালিনী'তে। সর্বগ্রাসী যন্ত্রসভ্যতার বিরুদ্ধে কৃষিজীবীদের সংগ্রাম 'মুক্তধারা'-য় এবং মনুষ্যত্বনাশী বিজ্ঞান ও বৈশ্যতন্ত্রের বিরুদ্ধে শ্রমিকশ্রেণীর লড়াই 'রক্তকরবী'-তে সংহত, ব্যঞ্জনাময় ভাবনা (বার্নার্ড শ'র ভাষায়,'Suggestively Dicussed`)উপ্ত করেছে। প্রচীন রূপকতা দেবদেবীর মূর্তি কল্পনা, আলপনা, নৃত্য লোকগীতির মধ্যে প্রতীকধর্মীতা দেখা যায়। রবীন্দ্রনাথ ও নাটকের দৃশ্য ও গানে প্রতীকের ব্যবহার করেছেন। অন্যান্য নাটকের সামান্য লক্ষণ হিসাবে বলা যায়, অমানবিক ও অশুভজড়বাদী শক্তি সামন্ত ও সংকীর্ণ অনুশাসন নিয়ন্ত্রিত সমাজে সার্বিক অবক্ষয় কার্যকারণ সূত্র দেখিয়ে রবীন্দ্রনাথ বিশ্ব-প্রেম, মানবধর্ম ও প্রতাপের উদ্বোধনে মুক্তি ও শান্তির পথনির্দেশ করেছেন। বর্তমান যুযুধান বিশ্বে রবীন্দ্রনাট্যভাবনা তাৎপর্যমন্ডিত। প্রাসঙ্গিক।

নাটকের বিষয়বস্তু বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় সমকালীন জাতীয় ও আন্তজার্তিক সমস্যা, অহংসচেতন মধ্যবিত্ত শ্রেণীর ভাঙ্গা-গড়া ও সমাজের জটিল মনস্তত্ব যেমন তাতে প্রভাব বিস্তার করেছে; তেমনি স্বদেশের পুরাবৃত্ত লোকসংস্কার ও ঐতিহ্য ভাবসংহতির বাতাবরণ রচনা করেছে। বেদ-উপনিষদের সুক্তে কবি খুঁজে পেয়েছেন সাবিদ্যা যা বিমুক্তয়ে। মুক্তিলাভের শিক্ষাই রবীন্দ্রনাথের নাট্যতত্ত্বের প্রধান উপজীব্য।

* বাংলা বিভাগ,কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়

© लेखक 2012, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

কবির নাট্যভাবনা একাধারে ক্লাসিক। নাট্যতত্ত্বে নিত্যকালের মানুষের জীবনমন্ত্র ও অক্ষয় প্রেমের আনন্দ তিনি উপলব্ধি করেন সমাজ বাস্তবতার মাঝে দাঁড়িয়ে। সামাজিক মানুষ হিসাবে আন্তর্জাতিকতাবাদী বিশ্বপ্রেমিক হিসাবে নিজের গরজেই কবি লোকসাধারণের কথা গভীর ভাবে চিন্তা করেছেন, তাদের জৈব মানসিক প্রতিক্রিয়া এবং ব্যক্তিগত সুখ দুঃখের সঙ্গে সমস্ত সমাজের বিরাট সুখ-দুঃখের সম্বন্ধটি অনুধাবন করার চেষ্টা করেছেন। লোকসাধারণ নামক যে সত্তা আপনার পরবিদ্যা ও শক্তির গৌরবে জেগে উঠেছে, সেই সত্তার সঙ্গে কবি শুধু নিজের নয় সকলের তথা বুর্জোয়া শ্রেণীর অধ্যাত্মযোগ এবং একটা বৃহৎ লৌকিক যোগস্থাপনে আগ্রহী। জনসাধারণের চেতনার অধিকারকে চারিদিকে প্রশস্থ করে, দেশের অনুভবশক্তিটাকে ব্যাপ্ত করে কবি চান মানুষের মনের চলাচলকে বহুমুখী ও অবাধ করে তুলতে যাতে সে বড় হয়ে উঠতে পারে, যাতে সে আপনার মধ্যে বৃহৎ মানুষকে ও বৃহৎ মানুষের মধ্যে আপনাকে উপলব্ধি করতে সক্ষম হয়।

কবি মনে করেন, মানুষের সঙ্গে মানুষের যে একটা সাধারণ সামাজিক সম্পর্ক আছে, সেই সহজাত সামাজিকতার টানে ঈশ্বরদত্ত প্রীতির অধিকার নিয়ে সমমর্যাদার ভিত্তিতে মানুষকে ভালোবাসা বা তার প্রাপ্যটুকু আদায় দেওয়া আমাদের কর্তব্য। কুল-মান-ধনের অহংকারে মত্ত হয়ে অশিক্ষিত, অন্ত্যজ বা দরিদ্রকে ঘৃণা করে তথা মানুষের প্রাণের ঠাকুরকে নির্বাসিত করে কোনো জাতি এগিয়ে যেতে পারে না। কবি 'লোকহিত' প্রবন্ধে স্বদেশের আত্মাভিমানের মদে মাতাল এক শ্রেণীর উন্ন্যসিক ও অপরিণামদর্শী মানুষকে সর্তক করে দিয়ে বলেছেন, ''.....নিতান্ত সাধারণ সামাজিকতার ক্ষেত্রে যাহাকে ভাই বলিয়া, আপন বলিয়া মানিতে না পারি, দায়ে পড়িয়া রাষ্ট্রীয় ক্ষেত্রে ভাই বলিয়া যথোচিত সতর্কতার সহিত তাহাকে বুকে টানিবার নাট্যভঙ্গী করিলে সেটা কখনোই সফল হইতে পারে না।'' সমাজ-ধর্ম-রাজনীতি ও অর্থনীতি বিষয়ক প্রবন্ধগুলিতে যেমন মানুষের মনুষ্যত্ব ও ঐক্যবোধের ওপর বিশেষ জোর দিয়েছেন, নাট্যভাবনাতেও তেমনি তিনি আশ্রয় করেছেন ব্যক্তির অহংবোধের সঙ্গে বিশ্বমুখী সত্তার সহজ সম্বন্ধ ও সংকটের মৌলিক সত্যকে। মানুষকে বৃহত্তর সমাজ পরিবেশে স্থাপন করে বহুর সঙ্গে তার মিল-গড়মিল এবং প্রতিকূল শক্তি সমূহের সঙ্গে ব্যক্তিসত্তার বিরোধ মীমাংসার জটিল রসায়নটি কবি রূপক, প্রতীক, গান, বা কাব্যিক ভাষার ব্যঞ্জনায় নাটকে প্রকাশ করেছেন। 'লোকহিত' প্রবন্ধে কবি লিখেছেন, '.....সমাজের উদ্দেশ্যই এই যে, পরস্পরের পার্থক্যের উপর সুশোভন সামঞ্জস্যের আস্তরণ বিছাইয়া দেওয়া।'

যুগের দাবিকে প্রত্যক্ষ বা সচেতনভাবে মেনে নিয়ে সাহিত্যসৃষ্টির পক্ষপাতী ছিলেন না কবি। তবুও প্রতিভার ক্রমপরিণতির অপরাহ্নে তথা বলাকা ও অন্ত্যপর্বে দেখা যায়, কবি তত্ত্বপ্রধান ('ফাল্গুনী', 'অরূপরতন', 'ঋণশোধ', 'মুক্তধারা','রক্তকরবী','পরিত্রাণ' ইত্যাদি) নাটক রচনার ফাঁকে ফাঁকে বাস্তবতা ও স্বাভাবিকতার দাবীকে মেনে নিয়েই কাব্যে, পুরুষ বেশী 'চিত্রাঙ্গদা'[১] গদ্য আমদানী করার মত সমকালীন আর্থ সামাজিক সমস্যা মুলক নাটক, প্রহসন, নৃত্য নাট্য ('চিরকুমার সভা', 'নটীর পূজা', 'শেষরক্ষা', 'কালের যাত্রা', 'তাসের দেশ', 'চন্ডালিকা', 'শ্যামা', 'মুক্তির উপায়') লিখেছেন। কালচেতনা রবীন্দ্রনাথের নাট্যভাবনা কে বিবর্তনশীল জীবনের বিচিত্র অভিব্যক্তির সঙ্গে জড়িয়ে দিয়ে তার আনন্দমূল্য ও অগৌরব বৃদ্ধি করেছে। ভাবাবেগের সঙ্গে জীবন সমস্যাকে গভীর ভাবে রুপ দিয়ে এবং তথ্য ও তত্ত্বের সাহায্যে তার পরিণতিটি উপস্থাপিত করে কবি তাঁর নাট্যভাবনাকে রসনিস্পত্তির সহায়ক করে তুলেছেন ।

লৌকিক সমাজজীবন সম্বন্ধে নিরলস ঔৎসুক্যজাত গভীর অভিজ্ঞতা ও সুস্পষ্ট ধারণা থাকায় কবির নাট্যভাবনা সমৃদ্ধিলাভ করেছে, আঙ্গিক, চরিত্র সংলাপ, ও নাটকীয় সংঘাত বা রসসৃষ্টিতে বাস্তবতার ছোঁয়া লেগেছে। স্বামী বিবেকানন্দের মতো কবিও জাতীয় ও আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে সামাজিক,

অর্থনৈতিক,ও রাজনৈতিক গতি প্রকৃতি বিশ্লেষণ করে যথার্থই উপলব্ধি করতে পরেছিলেন শুদ্র জাগরণ অনিবার্য ও আসন্ন। প্রাণ প্রাচুর্যে ভরপুর অথচ অবহেলিত এই আগ্নেয় শক্তি শীঘ্রই শোষণ ও অপশাসনের শেকল ছিঁড়ে সমাজের স্বাধিকার প্রতিষ্টা করবেই। ব্রাহ্মণের উন্নাসিকতা, ক্ষত্রিয়ের হুংকার ও বৈশ্যের অহংকারকে লজ্জা দিয়ে সবার নিচে সবার পিছে সর্বহারাদের মাঝে থাকা শুদ্র সম্প্রদায় সুসংহত প্রয়াস ও নিরবচ্ছিন্ন সংগ্রামের মাধ্যমে যে প্রাপ্য মর্যাদা ও অধিকার আদায় করবে। এই সত্য উদ্ভাসিত হয়েছে কবির ইতিহাস চেতনায়, কালচেতনায়। এই ভাবসত্যকে কবি যৌবনে 'রাজা ও রাণী' নাটকের স্পষ্টভাষায় রচিত-বুভুক্ষজনতা চরিত্রের মাধ্যমে ব্যক্ত করেছেন এবং পরিণত বয়সে 'মুক্তধারা', 'রক্তকরবী', 'কালের যাত্রা' প্রভৃতি নাটক নাটিকায় প্রতীক ও তত্ত্বের মাধ্যমে পরিবেশন করতে চেয়েছেন। অবশ্য মাঝে মাঝে জনমত সৃষ্টি তাগিদে কবি 'বানিয়ে বলা কথা'বা হেঁয়ালী ছেড়ে নাটকের পাত্র-পাত্রী সোজাসুজি প্রকাশ করেছে তাদের ক্ষোভ ও অঙ্গীকার :-

''.....অনেক কাল চন্ডালের রক্ত শুষে ঢাকা আছে অশুচি,
এবার পাবে শুদ্ধ রক্ত। স্বাদ বদল করুক।''

এই উক্তির প্রতিধ্বনি শুনি 'রথযাত্রা'-য় সৈনিকের মুখে :-

''.....বাবার রথের চাকা এতদিন যত সব চন্ডালের মাংস
খেয়ে অশুচি হয়ে আছে । আজ শুদ্ধ মাংস পাবে ।''

সৈন্যদের সংলাপের সূত্র ধরে কবির দেওয়া আর একটি গভীর ও বৈজ্ঞানিক ইঙ্গিতের সন্ধান পাওয়া যায়। সৈনিকদের আনুগত্য পাত্র বদল করছে, তাদের রাজভক্তি জনসাধারণের প্রতি সহানুভূতিতে

---

(১) কবির স্নেহাস্পদ ছাত্র প্রমথনাথ বিশীর মন্তব্য

পরিনত হচ্ছে ; তরবারির মুখ যাচ্ছে ঘুরে। নতুন চেতনায় উদ্বুদ্ধ পেশাদার সৈনিকরা রাজা বা পুরোহিতের হাতে রথ না চলার কারণ জানতে চায় কবির কাছে। মূঢ় পুরোহিত কবিকে বলেন :-

'' তোমার শুদ্রগুলোই কি এত বুদ্ধিমান
ওরাই কি দড়ির নিয়ম মেনে চলতে পারবে ।''

(কালের যাত্রা)

মেয়েদের অন্ধবিশ্বাসের ভিত এসে যায় । তারা সবিস্ময়ে দেখে, দেবতা ''মানলে কিনা শুদ্দুরের টান, মেলেচ্ছর ছোঁওয়া।' রাজা-পুরোহিত-সৈনিক-নাগরিক সকলের সব সংশয় শঙ্কা মোচন করে কবি শোনান মধ্যযুগের সৃষ্টি রহস্য ; কেমন করে গণজাগরণের আগুনে মিথ্যা কে ছাই করে মানবসত্য প্রতিষ্টিত হয়, কেমন করে ছোট-বড়োর ভেদ ঘুচিয়ে ঠাকুর সমান করে নিলেন তার আসলটা। উল্টোরথের পালায় কবি ভক্তিরসের বদলে মানব রসের নিষিক্ত করে গাইলেন মহাকালনাথের বন্দনা :-

''যারা এতদিন মরে ছিল তারা উঠুক বেঁচে;
যারা যুগে যুগে ছিল খাটো হয়ে , তারা দাঁড়াক একবার মাথা তুলে।''

নাটকে এ চরণকবির বলিষ্ঠ প্রত্যয় লোকায়ত জীবনের নাট্যকার কবি রবীন্দ্রনাথের নিজস্ব প্রতিধ্বনি।

'বাঁধি-বোলের বেড়া' ভেঙ্গে ফেলবার আহ্বান জানিয়েছেন কবি বারবার। গতিবাদী কবি শুধু 'বলাকা' কাব্যগ্রন্থে জরাসন্ধের দুর্গ ভেঙ্গে জ্যা-মুক্ত চেতনা ও যৌবনের আবাহন করেননি; গণমানসে মান্ধাতা আমলের অদৃষ্টবাদের বদলে নতুন এক শক্তির সন্ধান করেছেন তাঁর নাটকে । এই শক্তি গ্রীক নাটকের নিমোসিস (Nemosis)নয় ; ভারতীয় সংস্কার জাত ভাগ্য বা দৈব্যও নয় এ হলো মানুষের মগ্নচৈতন্য জাগরণের বা সুপ্ত শক্তিবিস্ফোরণের প্রেরণা যা আসে আকাশের আলোর মতো। পাশ্চাত্য

জ্ঞান বিজ্ঞান তথা বহিঃর্বিশ্বের রেনেশাসের হাওয়া যেমন প্রথমে বাংলা ও ক্রমে সমগ্র ভারতবর্ষে নবজাগৃতির বাতাবরণ রচনা করেছিলো তেমনি রবীন্দ্রনাথের কোনো কোনো নাটকে দেখা যায়, গ্রাম বা স্থান বিশেষের জনগণকে মানুষের মর্যাদা ও অধিকার বোধে উদ্বুদ্ধ করেছে বা শোষণের বিরুদ্ধে সংগ্রামে অনুপ্রাণিত করেছে সেখান কার মাটি-মানুষের সঙ্গে সম্পর্কহীন বাইরের কোনো লোক। 'অচলায়তন' বা 'গুরু' নাটকে অন্ধ অভ্যাসের জগতে পুঁথির বদলে প্রাণের প্রতিষ্ঠা কল্পে প্রাচীর ভেঙ্গে অচলায়তনে যোদ্ধাবেশে প্রবেশ করেন দাদাঠাকুর যিনি মহাপঞ্চককে বলেছেন '.....তুমি আমাকে চিনবে না কিন্তু আমি তোমাদের গুরু।' স্থবিরকের রক্তের সঙ্গে শোনপাংশুর রক্ত মিলিয়ে, লাল-সাদায় মিশিয়ে শ্রেণী সমন্বয়ের ভেতর দিয়ে দাদাঠাকুর জ্ঞানবাদীকে কর্মবাদে প্রাণিত করে বিশ্বের সকল যাত্রীর সঙ্গে দাঁড় করিয়ে দিতে চান সোজা রাস্তায়।

'ডাকঘর'-এর অমল নিখিল বিশ্বে নিজেকে ছাড়িয়ে দিয়ে মনের মুক্তি প্রাণের আনন্দ সন্ধান করে পিসেমশাই বা মোড়লের কাছে নয়, রাজার কাছে । কোনো স্থান বিশেষের নর-দানব বা দেবাতর বেশে এ রাজা বিরাজ করেননা। 'মুক্তধারা' নাটকের অভিজিৎ পোষাকী পরিচয়ে যুবরাজ হলেও সে রাজা রনজিতের কেউ নয় ; সে উত্তরকূটের নয়, শিবতরাইয়ের নয় , মোহগড়ের নয়। মুক্তধারার ঝরণা তলায় তাকে কুড়িয়ে পাওয়া গিয়েছিল। স্রোতের পথ তার ধাত্রী। জন্মকালের ঋণ শোধ করবার জন্য এই অজ্ঞাতকুলশীল বালক নন্দী সঙ্কটের পথ তো খুলে দেয় ; মুক্তধারার বাঁধ ভাঙে। রাজা বিশ্বজিতের হৃদয়ে সে এসেছে আলোর মতো, উৎপীড়িত প্রজাদের কাছে সে এসেছে সংহতি ও বিপ্লবের বাণী বাহক হিসেবে।

'রক্তকরবীর'-র রঞ্জন নীলকণ্ঠ পাখির মতোই দুরন্ত যৌবন, মুক্তপ্রাণ জয়ের আশ্বাস। জড়বাদী সভ্যতায় শোষিত শ্রমিক শ্রেণীকে চেতনার আগুনে শোধন করে মুক্তি সংগ্রমে উজ্জীবিত করে রঞ্জন যক্ষপুরীর রাজা বা সর্দারদের চটকা ভেঙ্গে যেতে পারে 'রঞ্জন বিধাতার সেই হাসি।'নন্দিনী পায় রঞ্জনের খবর সেই পথে ''যে পথে বসন্ত আসবার খবর আসে সেই পথ দিয়ে। তাতে লেগে আছে আকাশের রঙ, বাতাসের লীলা।'' তত্ত্ব আর বাস্তব মিলে রঞ্জন আধো মিস্টিক আধো রিয়ালিস্ট চরিত্র-রোমান্সের রঙে রাঙা একটি বিপ্লবী ব্যক্তিত্ব। তার ভালোবাসার রঙ রাঙা; নন্দিনী তার চোখে আদরের রক্তকরবী। রাজা ঠিকই উপলব্ধি করেছে, ''রঞ্জনের মধ্যে আছে জাদু।''এ হলো সহজ বিকাশের, সরল জীবনবোধের প্রাণের জাদু-অনাড়ষ্ট, অদ্ভুত। বৈষম্যের বদ্ধ জগতে সে ছুটি বা মুক্তি বয়ে বেড়ায় । তুফানের নদী, বুনো ঘোড়া, লাফ দেওয়া বাঘ, ভয়ংকর রাজা সব ভয় জয় করে রঞ্জন নন্দিনীর ভাষায়, 'প্রাণ নিয়ে সর্বস্বপণ করে সে হার জিতের খেলা খেলে।'হুকুম মেনে কাজ করার অভ্যাস তার নেই তার কাজের পদ্ধতি বিচিত্র; গানের সুরে বা নাচের তালে তালে আনন্দময় কর্মাসধনার দীক্ষা দেয় সে খোদাইকারের। বজ্রগড়ের সুরঙ্গ থেকে কুবের গড়ে সে কেমন করে এলো, কেমন করেই বা শেকেলের বাঁধন থেকে গারদের ভিত কেটে বেরিয়ে এসেছে তা কেউ জানে না। সর্দারের মনে হয় 'লোকটা পাগল'। মোড়ল সবিস্ময়ে বল্ল '.....ও কথায়-কথায় সাজ বদল করে চেহেরা বদল করে। আশ্চর্য ওর ক্ষমতা।' সারেঙ্গি বাজিয়ে গান গেয়ে এই চরণ গায়ক শ্রমজীবীদের মরা পাঁজরের ভেতর প্রাণ নাচিয়ে তোলে। নির্বোধের গম্ভীর মুখোশ খসিয়ে অট্টহাসিতে উড়িয়ে দিতে চায় মনুষ্যত্বের লজ্জা, প্রাণের দৈন্য। রাজদ্রোহী রঞ্জন মানে না শাসন, না মানে বন্ধন। যক্ষপুরীর শ্রমিকদের স্বৈরাচার ও অন্যায়ের বিরুদ্ধে জোট বাঁধতে বা লড়াই করতে শেখায় যে রঞ্জন, সে তো খোদাইকারদের আত্মীয় বা গোষ্টীভুক্ত নয়।

রঞ্জনের শিক্ষা দীক্ষা-জীবনবোধ সবই স্বতন্ত্র। নিজেকে সে বানাতে রাজী নয় বা ফাগুলাল বা গোকুলদের মতো হাটের শেষে মদ খেয়ে বেহুঁশ হয়ে মনের জ্বালা ভুলতে চেষ্টা করে না। দুঃখকে ভাগ্য বলে ওদের মতো ভেবে না নিয়ে বরং দুঃখ শোষণের শেকড় উপড়ে ফেলতে চায় রঞ্জন; পাতালের

দুঃখের দেশে নন্দিনী যেমন 'সুন্দরিপনা করে বেড়ায়' তেমনি সুন্দরের সাধনা রঞ্জনের। এ রঞ্জনে খোদাইকর-অধ্যাপক-পুরাণবাগীশদের চেনা জগতের কেউ নয়; ফাগুলাল-বিশুদের মতো সংখ্যামাত্র নয় সে যেন শুদ্ধ স্নিগ্ধ পূর্নিমা, যার দ্যুতি নন্দিনী ; যার উল্টোপিঠ অমাবস্যার জড় জীবনের সমন্বয়ে গড়া রঞ্জনের ভিতর দিয়ে মহাকাল যেন নবীনকে প্রকাশ করেছে। তত্ত্ব আর বস্ত মিলে রঞ্জন একটা মানবমূর্তির নামমাত্র থাকে না ; মনে হয় যেন এক বিদ্রোহী প্রতীক যার গায়ে কিছু চেপে ধরে না। নন্দিনী ঈশানী পাড়ার। পাশের গাঁয়ের লোক অনুপ উপমন্যু। কিন্তু রঞ্জন কোথাকার কেউ জানে না। তার কাজের ধরন দেখে মোড়ল রঞ্জন সম্পর্কে সর্দারকে বলেছে,'ভেলকি জানে।'

মানুষকে জাগিয়ে তোলার, প্রাণে প্রাণে আগুনের স্পধার মতন সৃষ্টি করার এই আশ্চর্য শক্তিটির পরিকল্পনায় কবি দেশীয় লোকসংস্কার ও রুচির কথা বিশেষ ভাবে বিবেচনা করেছেন । রঞ্জনের আচরন এবং তার সম্পর্কে নন্দিনী ও অন্যান্যদের মন্তব্যের ভিত্তিতে বলা যায় প্রতীকী চরিত্রটি অলৌকিক ও অতিমানবীয় সত্তা নিয়ে চেতন লোক থেকে ভুগর্ভের অচেতনলোকে দুরাগত ভোরের আলোর মতো। 'সোনারতরী'-কাব্যগ্রন্থের 'দুই পাখি' কবিতায় কবি সামাজিক জীব হিসাবে মানুষের অস্তিত্ব সংকট বা মানব হৃদয়ের দুটো পরস্পর বিরোধী প্রবণতা পরিস্ফুট করেছেন। মানুষ একদিকে চায় 'ঢাকা চারিধার', 'পরিপাটি' সংসার খাঁচায় নিরাপদ নিরালা গার্হস্থ্য জীবনের সুখ-স্বাছন্দ্য; অন্যদিকে সহজাত প্রক্ষোভের ধর্ম অনুসারে সে চায় থিতু জীবনের বা শেখানো বুলির শিকল কেটে স্বছন্দ বিহারের মুক্তনন্দন। এইখানেই প্রাণের যন্ত্রণা, মনের কষ্ট।

বনের পাখি যেমন 'আকাশ ঘন নীল' ছেড়ে সীমা জগতের রুদ্ধ খাঁচার পাশে বসে পাখা ঝাপটে বন্দি পাখীর মুক্তি কামনা করে তেমনি অভিজিৎ রঞ্জনরাও নিয়মের রাজত্বে বা অনুগত সেবা দাসদের যান্ত্রিক অভ্যাসের ও মোহাচ্ছন্ন সংস্কারের বদ্ধ জগতে নবচেতনা ও দৃঢ় প্রত্যায়ের 'বনগান' শোনাতে এসেছে; শ্রমজীবী দের মধ্যে মুক্তির আকাঙ্খা ও সংগ্রামের সাহস জাগাতে এসেছে। যদিও নাটকের গঠনতন্ত্রে এই বহিরাগত শক্তি ধনঞ্জয় বা রাজার মতো মূল শক্তি হয়ে উঠতে পারে নি ; তবু নাট্য-ভাবনাকে গভীর ব্যাঞ্জনায় সমৃদ্ধ হতে সাহায্য করেছে তারা নিঃসন্দেহে।

কবির নাট্য ভাবনার একটি গুরুত্বপূর্ণ বিষয় তাঁর ধর্মভাবনা যা একান্তভাবেই তাঁর নিজস্বতায় বিশিষ্ট। উপনিষদের ঋষিদের মতো তিনিও মনে করেন, ঈশ্বর আনন্দস্বরূপ। 'সৃষ্টিবাঁধন পরে বাঁধা' প্রভুর সঙ্গে কর্মযোগে নিজেকে মিলিয়ে সাধনাকে সার্থক করে তোলার আহ্বান জানিয়েছেন কবি মুক্তিকামী মানুষকে। 'গীতাঞ্জলি'র গানে, 'পূরবী'-র 'মনুক্তি' কবিতায় এবং অন্যত্র কবি তাঁর ভগবানকে তথাকথিত ভক্তদের বা সাধারণ আস্তীক্যবাদীদের মতো মনগড়া স্বর্গলোক স্থাপন করেননি বা প্রচলিত সংস্কার মেনে বৈরাগ্য সাধনে মুক্তি অন্বেষণ করেননি ; বিশ্বের কর্মকেন্দ্রে সৃজন প্রেরনার যে আদি রহস্য, আপামর সৃষ্টির মধ্যে যখন সেই রহস্যের প্রকাশ ঘটে তখনই মানুষ পূর্ণ মুক্তির স্বাদ লাভ করে। দেশ-কালের উর্দ্ধতর যে পরিণাম তাতে সৃষ্টি-প্রেরণা নেই বলেই কবি অপ্রাকৃত দেবলোক সম্পর্কে ধারণাকে প্রশ্রয় দেন না বা শ্রম বিমুখ 'ভজন-পূজণ-সাধন-আরাধনা' কেও আশ্রয় করেন না। সৃজনক্ষম অক্ষয় প্রাণের সঙ্গীতে মানুষ শোনে পূর্নের পদধ্বনি।

ধর্ম সম্পর্কেও কবির সুপষ্ট প্রত্যয় প্রতিফালিত হয়েছে তাঁর কাব্যে-গানে-নাটকে-প্রবন্ধে। নিজস্ব ধর্মাদর্শ ও লৌকিক ধর্মের মধ্যে কবি সামঞ্জস্য সাধনের সুত্র সন্ধান করেছেন। ধর্মের সংজ্ঞা নির্দশে করে কবি বলেছেন- ''সংসারে একমাত্র যাহা সমস্ত বৈষম্যের মধ্যে ঐক্য, সমস্ত বিরোধের মধ্যে শান্তি আনয়ন করে, সমস্ত বিচ্ছেদের মধ্যে একমাত্র যাহা মিলনের সেতু তাহাকেই ধর্ম বলা যায়'।[১] সত্য ও সৌন্দর্য নিয়ে সমস্ত মনুষ্যত্ব ধর্মে আশ্রিত হয়ে পূর্ণ সামঞ্জস্য লাভ করে। রবীন্দ্রনাথের দেবতা ও ধর্ম সম্পর্কে

ধারণাটি পৃথিবী ও তার মানুষকে আশ্রয় করেই গড়ে উঠেছে। লোকসমাজে প্রচলিত রাজধর্ম ,ক্ষত্রিয়ধর্ম, পতিধর্ম,ভাতৃধর্ম, সতীধর্ম বা সম্প্রদায় বিশেষের কোনো ধর্মই পরিত্যাজ্য নয় যতক্ষন তা ন্যায়ধর্মের প্রতিবন্ধক না হয়। কোনো বিশেষ লৌকিক ধর্ম যখন সত্য ও মানুষ্যত্বকে ত্যাগ করে অমানবিক ও অনৈতিক উন্মাদনার মঞ্চ হয়ে উঠে তখন তা বর্জন বা শোধনের প্রয়োজনহয়।এই বিজ্ঞানসম্মত বিশ্বাস নিয়েই কবি, 'বিসর্জন', 'নটির পুজা', 'কালের যাত্রা', নাটক নাটিকায় এবং 'গান্ধারীর আবেদন', 'সতী', 'নরকবাস', 'কর্ণকুন্তী সংবাদ', 'মালিনী' প্রভৃতি কাব্যে-নাট্যে লৌকিক ধর্ম বা রাজনীতির সঙ্গে ন্যায় ধর্মের সংঘাত ও সমন্বয়ের রুপটি চমৎকার ফুটিয়ে তোলেন। গোবিন্দমাণিক্য (বিসর্জন'), থেকে শুরু করে গান্ধারী, অমাবাই (সতী), সোমক (নরকবাস), মালিনী প্রভৃতির চরিত্রের প্রেম ও সংস্কার বা প্রাণ পুঁথির দ্বন্দ্বের ভেতর দিয়ে খন্ড ধর্মের উপর নিত্যধর্ম জয়ী হয়েছে। ব্যাক্তিকামনা ও সমাজভাবনার বৃহত্তর ক্ষেত্রে হারিয়ে গিয়ে শাস্ত্র আচার-অনুশাসনকে বা ক্ষত্রিয়য়ের ধর্ম বা রাজনীতিক মানবকল্যাণে নিষিক্ত করে সমাজ-সংহতির উপায় অন্বেষন করে ট্রাজিক ব্যক্তিত্বগুলি। কবির চোখে মানবধর্মই শ্রেষ্ট, নিত্যধর্মই শেষ কথা। গান্ধারী বলেন, '.....ধর্মেই ধর্মের শেষ।' বিনায়ক শাস্ত্রাচারের ও অন্ধ স্নেহের অসারতা উপলব্ধি করেন :-

'সমাজের চেয়ে
হৃদয়ের নিত্যধর্ম সত্য চিরদিন।'

তপতি নাটকে ত্রিবেদীর উক্তিতে শ্রুতি ও স্মৃতিসর্বস্ব আস্তিক্য বাদীদের পৌত্তলিকতার অন্তঃসারশূন্যতা প্রতিধ্বনিত হয়েছে।

কবি আনন্দবাদী। তিনি বিশ্বাস করেন, আনন্দ থেকেই সৃষ্টি। খন্ড প্রাণ ও অখন্ড প্রাণের বিরহ মিলনের লীলানিকেতনেই তো জগৎ সংসার। আনন্দ উৎসারিত হয় বিকল্পিত হয় তারই সৃষ্টির মধ্যে সৃষ্টির বৈচিত্র্য ও ঐশ্বয়ের ভেতর দিয়ে। অনেক কবিতায় যেমন কবি আনন্দস্বরুপ অমৃতের স্বাদ পেয়ে জীবনের পেয়ালাভরা বেদনা ভুলতে চেয়েছেন। তেমনি প্রাণের মুক্তির উল্লাস বাঙময় হয়েছে অসংখ্য গানে :- ক) জগতে আনন্দযজ্ঞে
খ) আনন্দধারা বহিছে ভূবনে
গ) ওরে আয়রে তবে মাতরে সবে আনন্দে
ঘ) ধরনীর গগনের মিলনের ছন্দে - প্রভৃতি

---

(১) ধর্মপ্রচার, ধর্ম, পৃ: ৬৫ (সতী)

এই আনন্দের আবেগে কবি মানবমৈত্রীর বাণী নিয়ে এগিয়ে গেছেন 'ও পাড়ার প্রাঙ্গনের ধারে যেখানে -

''চাষি খেতে চালাইছে হাল,
তাতিঁ বসে তাঁত বোনে , জেলে ফেলে জাল -
বহুদুর প্রসারিত এদের বিচিত্র কর্মভার
তারি পরে ভর দিয়ে চলিতেছে সমস্ত সংসার।'' (১)

কবির প্রেম ব্যর্থ হয়নি। শংকা আর সংকোচের বেড়া ভেঙ্গে ও পাড়ার অন্ত্যজ শ্রেণীর এত কালের উপেক্ষিত মানুষগুলো সাড়া দিয়েছে তাঁর ডাকে 'কৃষাণের জীবনের শরিক যে জন যোগ দিয়েছে তাঁর 'সাহিত্যের আনন্দ ভোজে'। কবির ঐকানুভুতির Centrifugal বা কেন্দ্রাতিগ আর্তি এবং ব্রাত্যজনের Centripetal বা কেন্দ্রভিগ আকুতি এক অভিন্ন মিলনের এষণায় যুক্ত হয়েছে নাটকেও।

সাধারণ মানুষ তথা গ্রামীণ সংস্কৃতির প্রতি কবি আকস্মিক কোনো কারণে অনুরাগী হয়ে উঠেননি। সমগ্র রবীন্দ্রসাহিত্যে লোকজীবনের প্রতি তাঁর অনুসন্ধিৎসা ও মমতার ক্রম স্ফুরনে একটি

সুপষ্ট ধারা বর্তমান । শহরের ঘেরাটোপের ও কঠোর নিয়ামানুবর্তিতার মধ্যে প্রতিফালিত কিশোর বা যুবা কবি যাত্রা পাঁচালি, বাউল প্রভৃতি গ্রাম্যকৃষ্টির সঙ্গে ভালোভাবে পরিচিত হওয়ার সুযোগ পাননি। সঙ্গতকারণেই এ-গুলি সম্পর্কে তার কিছু কিছু ভ্রান্ত বা অস্পষ্ট ধারণা প্রসুত উন্নাসিকতা ছিলো। হয়তো তার ধারণা ছিলো, পল্লীর নাচ-গান স্বভাবধর্মে লঘু এবং অশিক্ষিত মাতালদের অবসর বিনোদনের উপায়মাত্র। অষ্টাদশ শতাব্দীর কবি, খেউর প্রভৃতি নামে গ্রাম ও শহরে (বিশেষ করে কলকাতায়) অনুষ্টিত আদিরসাত্বক ভাঁরামি বা বল্গাহীন কুৎসার কদর্য- ইতিহাস পরবর্তী প্রজন্মের মনে গ্রামের কোনো কোনো অনুষ্ঠান বা বিনোদন সম্পর্কে কিরূপ মনোভাব সৃষ্টি করতে পারে। তবে,কালের নিয়মেই রুচি বদলায়, দৃষ্টিভঙ্গিও পাল্টে যায়। উদাহারণ হিসাবে 'পোষ্টমাষ্টার' গল্পের উল্লেখ করি এই গল্পটির তৃতীয় অনুচ্ছেদ শুরু হয়েছে এইভাবে, ''বিশেষত কলিকাতার ছেলে পোষ্টমাষ্টার হয়ে এসেছে উলাপুর গ্রামে । এই গন্ডগ্রামে সে যেন ডাঙায় তোলা জলের মাছ।''এ উপমা কবির। কয়েকটি কথায় শহর ও গ্রামীণ পরিবেশের বৈসাদৃশ্য বর্ণনা করার পর এবং অনাথা রতনের পরিচয় জ্ঞাপনের পর কবি স্বয়ং সান্ধ্যপল্লীর খন্ড খন্ড চিত্র উপস্থাপিত করতে গিয়ে লিখেছেন, ''.....দূরে গ্রামের নেশাখোর বাউলের দল খোল করতাল বাজাইয়া উচ্চৈঃস্বরে গান জুরিয়া দিত।' ১২৯৮ (?) সালে কবি যখন এমন কথা বলেন, বোঝা যাচ্ছে তখন বাউলাঙ্গের গানকে তিনি অশ্লীল বলেই বিবেচনা করতেন। অথচ, এই গল্পটির বছর পনের পরে লেখা ' রাজা' নাটকে দেখি কবি বাউলের দল ও তাদের গানকে মর্যাদা দিয়েছেন এবং বছর পাঁচেক পরে 'ফাল্গুনি'-তে অন্ধ বাউল নামে একটি চরিত্র সৃষ্টি করেছেন। 'মুক্তধারা'-য় বৈরাগী ধনঞ্জয় কে তথা এক বাউলকে করলেন অন্যতম প্রধান চরিত্র। আবার, পৃথক বাউল চরিত্রও এখানে গান (ও তো আর ফিরবে না) গেয়েছে। এমনকি নগরজীবন নির্ভর 'গৃহপ্রবেশ' নাটকে শিক্ষিত যুবা যতীন গান করে কিনু বাউলের গান (ও রে মন যখন জাগলি)। বোঝা যায় কবি ধীরে ধীরে যেমন' কিনু গোয়ালার গলি' চিনেছেন, তেমনি কিনু বাউলের গানে সমাজবাস্তবতা ও রসতত্ত্ব উপলব্ধি করতে পেরেছেন।

'পঞ্চভূত' প্রবন্ধ-ডায়েরির 'নরনারী' 'সৌন্দর্যের সম্বন্ধ' প্রভৃতি প্রবন্ধে দেখা যায়, অবিমিশ্র বস্তুবাদের সমর্থক ও রক্ষণশীলতার প্রতীক অনমনীয় ভ্রান্তি ও মানস জড়ত্ব ক্রমে দূর হয় এবং জীবন ও জড়ত্ব, মানুষ ও প্রকৃতির সমন্ধটি আবিস্কৃত হয়। দর্শনের বোধ, সাহিত্যের আনন্দোপলব্ধি ও বিজ্ঞানের জ্ঞানের স্বতঃস্ফূর্ত বিকাশের ক্ষিতির বাস্তব চেতনা কোমল হৃদয়ানুভূতির স্পর্শে স্নিগ্ধ হয়ে উঠেছে। শুধু ক্ষিতির নয়, জগৎ ও জীবন সম্পর্কে কবির নিজের ধ্যান-ধারণা ও ক্রমপরিণতিমুখী ও নমনীয়।

.....

(১) ঐক্যতান

কবি নাটকেও তাঁর বিশিষ্ট আনন্দাবাদ ও সৌন্দর্যবোধের সাহায্যে আত্মার সঙ্গে জড়ের বা মানুষের সঙ্গে প্রকৃতির এবং মানুষে মানুষে মিলনের ক্ষেত্র প্রস্তুত করেছেন; মুছে দিয়েছেন-ইতর-ভদ্রের-ভেদ রেখা। এসঙ্গে বলা দরকার, রবীন্দ্রনাথের উপন্যাস মূলত উচ্চশিক্ষিত, মধ্যবিত্ত, সংবেদনশীল বুদ্ধিজীবী বাঙালীর প্রতিচ্ছবিই চোখে পড়ে। অন্যদিকে দেখা যাচ্ছে 'গল্পগুচ্ছ'-র প্রথম দুটি পর্বে পল্লীপ্রকৃতি ও প্রাকৃত জীবন সম্ভব সমস্যাবলীর বস্তুনিষ্ঠ বর্ণনা দান করেছেন।[১] তৃতীয় পর্বটি নগর কলকাতার বিভিন্ন উপকরণ ও প্রেরণা সঞ্জাত। তবে বিস্ময়কর ব্যাপার হলো, প্রতিবেশ নিরপেক্ষ আঙ্গিকেও দেখা যায়, সাধারন মানুষের সুখ দুঃখ মুখ্য বিষয় হয়ে উপন্যাসে বিশ্লেষণী দৃষ্টিভঙ্গি এবং গল্পে হৃদয়প্রানতা - এই দুয়ের প্রাপ্তীয় বিরোধ কবি সামঞ্জস্য খুঁজতে চেয়েছেন নাটকে।বস্তুত কবির

উপন্যাস ও ছোটগল্পের মধ্যে যোগসুত্র রচনা করেছে তাঁর নাটকে। ভাবের বিশ্লেষণ ও হৃদয়ানুভুতির সমন্বয় সাধিত হয়েছে কবির নাটকে।

বিশেষ করে 'মুক্তধারা', 'রক্তকরবী', 'কালের যাত্রা', প্রভৃতি সমাজতত্ত্বাশ্রয়ী নাটক নাটিকার মূল ভাবটি দানা বেঁধেছে কবির একটি বিশেষ প্রত্যয়কে অবলম্বন করে। নায়ক পুরুষ সম্পর্কে তাঁর নিজস্ব একটি চিন্তাধারা আছে। একদিন 'চিত্রা'-য় কবি জীবনদেবতার হাত ধরে নিরালম্ব কল্পনার মায়াবী জগৎ ছেড়ে 'সংসারের তীরে' বস্তুজগতের মাঝে যেতে চেয়েছিলেন। পার্থিব জগতে স্বর্গের অমৃত যত না পেয়েছে তার চেয়ে অনেক বেশি ভোগ করেছেন শোক-তাপ। আঘাতে দৃশ্যে শতধা ব্যক্তিজীবনে ও কবিও যেমন আশাবাদী তেমনি সমস্যাজর্জর মুমুর্ষু বিশ্বের পরমায়ু ও মঙ্গল সম্পর্কেও প্রত্যাশী।'ভারত বিধাতা' গানটিতে কবি গেয়েছেন সেই ভারতবিধাতার জয়গান যাঁর শুভ আশিষ মাথায় নিয়ে মানুষ শান্তি ও সমৃদ্ধি লাভ করে। ভারতবর্ষ বা রাষ্ট্রবিশেষের নাগরিকরা শুধু নয়, বিশ্বের নিত্যকালের যাত্রীকে বা সকল সাধারণ মানুষকে জীবনের সংকটকালে সমস্যাজটিল গ্রন্থিমোচনে বা শংকা-সংশয় করে পতন-অভ্যুদয়-বন্ধুর পথে । চলতে যিনি একাধারে বন্ধু-দার্শনিক ও পথ প্রদর্শকের মতো সাহায্য করেন বা প্রেরণা যোগান ; তিনি বিশেষ কোন মানব বা রাজা নন - সর্বনিয়ন্তা ঈশ্বর ,বিশ্বপিতা। তিনি একই সঙ্গে কবির ভাষায় - 'স্নেহময়ী তুমি মাতা' আবার 'সংকট দুঃখ ত্রাতা' 'রাজেশ্বর' যাঁর নতনয়নে জেগে থাকে অবিচল। এই গানটি লেখা হয় ১৩৩৮ সালে । এর ত্রিশ বছর পরে শান্তিকেতনের উদয়নে বসে কবি লিখলেন, 'ঐ মহামানব আসে'(১লা বৈশাখ' ১৩৪৮ সালে) গানদুটির প্রতিটি চরণে সতর্ক দৃষ্টিদিলে বা ভাব বিশ্লেষণ করলে দেখা যায় ,'ভারতবিধাতা'-রচনার পর কবির ধ্যাণ-ধারণায় ক্রমে পরিবর্তন সূচিত হচ্ছে এবং পরবর্তী তিন দশকে তাঁর ঈশ্বরানুভুতি ধীরে ধীরে বিশ্বানুভুতিতে উন্নীত হচ্ছে। তিনি যুদ্ধসংক্ষুদ্ধ, দৈন্যপীড়িত, ক্লান্তধস্ত পৃথিবীতে নবজীবনের পদধ্বনি শুনতে পাচ্ছেন। ঈশ্বরের দক্ষিণমুখ দেখতে পেলেন তিনি সংসার মামে। ক্ষুদ্রতামুক্ত মনকে মানবপ্রেমে ঋদ্ধ করে নিখিলের সাথে নিজেকে যুক্ত করতে আগ্রহী কবি গাইলেন :-

'নবজীবনের যাত্রাপথে দাও দাও এই বর হে হৃদয়েশ্বর-

১৪ই পৌষ ১৩৪৩ তারিখে উত্তরায়ণে লেখা এই গানটি থেকে স্পষ্ট হয়ে উঠে কবি প্রবর্তণার ক্রম পরিণামমুখিতার বৈশিষ্ট্য। 'ভারতবিধাতা'-র রাজেশ্বর ক্রমে হয়ে উঠলেন কবির 'হৃদয়েশ্বর'। কবির ভাবজগতের বৈপ্লবিক বিবর্তনের চেহারা ও চরিত্রটি স্পষ্টতর হয়ে উঠল। বছর দেড়েকের মধ্যেই কবির অনুভূতি রোমাঞ্চিত হলো মহামানবের আবির্ভাবে। শংকাহর এই মানবনায়ককে বরণ করতে এগিয়ে এলো শুধু মানুষ নয় দেবতারাও। হতাশা-বেদনায় মূহ্যমান মানুষ নবজীবনের আশ্বাসে, মুক্তির উল্লাসে

---

(১) এ প্রসঙ্গে স্মরন করি বিশিষ্ট সমালোচক শ্রীকুমার বন্দ্যেপাধ্যায়ের সুচিন্তিত অভিমত মন্তব্যটি, ''সুতরাং তাঁহার সমন্ধে আমদের যে ধারণা যে তিনি শহরে কবি হঠাৎ পল্লী গীতিতে আকৃষ্ঠ হইয়া গ্রাম সমাজের উপর তাঁহার কাব্য কমন্ডুলু সঞ্চিত কিঞ্চিৎ মধুবৃষ্টি করিয়াছেন তাহার আমাদের স্বীকার করিতেই হইবে।''রবীন্দ্র-সৃষ্টি-সমীক্ষা (১ম খন্ড),২য় সংস্করণ (পৃঃ-৩২২)

মুখর হয়ে উঠে :-

'জয় জয় জয় রে মানব -অভ্যুদয়'মন্দ্রি উঠিল মহাকাশে।।'

বোঝা গেলো, 'ভাগ্যবিধাতা'-র করুণায় নয়, মানব-অভ্যুদয়েই মানুষের মুক্তি শান্তি। সাম্রাজ্যবাদী শক্তিগুলির সুবিধাবাদী আচরণ ও শিবির বদল, রাজনৈতিক অস্থিরতা, সুতীব্র অর্থনৈতিক সংকট প্রভৃতি সমকালীন আন্তর্জাতিক পরিস্থিতি সমাজ বিজ্ঞানীর দৃষ্টিকোণ থেকে গভীর ভাবে বিশ্লেষণ করে কবি উপলব্ধি করেন, ঐতিহাসিক নিয়মেই সমাজ ও রাষ্ট্রজীবনে মনুষ্যত্বের পূণর্বাসন কল্পে শক্তির স্থান

পরিবর্তন বা ক্ষমতার ভারসাম্য অবশ্যম্ভাবী। দেশে দেশে পর্যায়ক্রমে উচ্চবিত্ত ও সর্বহারা শ্রেণীর উচ্চবর্ণ ও অন্ত্যজ সম্প্রদায়ের মধ্যে অধিকার প্রতিষ্টার দ্বন্দ্ব সংঘাতের (Thesis Antithesis)ভেতর দিয়ে সংশ্লেষণ (Synthesis) বা সমন্বয় সাধিত হবে। বিরোধের মধ্যেই মিলনের বীজ উপ্ত হবে দুরদর্শী কবি কার্যকারণ সূত্রে আরও একটি সিদ্ধান্তে উপনিত হন, 'জনগনদুঃখত্রায়ক ' মহামানবের আবির্ভাব ঘটবে এতকাল যাবৎ অপমানিদ-বঞ্চিত-অন্তজ্য শ্রেণীর ভেতর থেকে, শোষিত শুদ্রদের মধ্য দিয়ে।

নায়ক পুরুষ বা মহামানব এবং তার অভ্যুদয় সম্পর্কে কবির এই সুচিন্তিত সিদ্ধান্তের প্রতিক্রিয়া প্রতিফলিত হয়েছে তাঁর নাটকেও। 'রাজা রাণী'-র বা 'বিসর্জন'-এর সংস্কারাচ্ছন্ন ও দৈববাদী অন্ত্যজ দরিদ্ররা নিপীড়ন বা অনিয়মের প্রতিবাদে ক্ষোভ প্রকাশ করলেও বা দল বাঁধার চেষ্টা করলেও সংহত ও চেতনা সম্পন্ন শক্তিরুপে তারা দানা বেঁধে উঠতে পারেননি। অথচ পরবর্তীকালে 'অচলায়তন' নাটকে দেখা যায়, অরণ্যচারী দূর্ভক, যূনক, শোনপাংশুরা আচার সর্বস্ব অচলায়তনের দেয়াল ভেঙ্গে সেখানে বইয়ে দেয় মুক্তির হাওয়া, যুদ্ধের রাত্রে স্থবিরকের রক্তের সঙ্গে শোনপাংশুর (রক্ত অশুচি যাদের ?)রক্ত মিলে গিয়েছে। বিপ্লবের লালের ভেতর দিয়ে পন্ডিত-মূর্খ ভেদ ঘুচিয়ে প্রাণের সানন্দ সাধনায় গড়ে উঠে সৃষ্টি শুভ সৌধ। 'ফাল্গুনী' নাট্যকাব্যে কবিশেখরের নাটকের প্রধান পাত্র ধীরোদাত্ত ক্ষত্রিয়বীর বা শাস্ত্রজ্ঞ ব্রাক্ষণ সন্তানের বদলে সম্পূর্নরূপে ঐতিহ্য বহির্ভূত এক সর্দার 'যে আমাদের চালিয়ে নিয়ে যাচ্ছে' এবং এক অন্ধ বাউল, 'চোখ দিয়ে দেখে না বলে সে তার দেহ মন প্রান সমস্ত দিয়ে দেখে। 'অরূপরতন'-এ রাজা ও তাদের পাইকদের সম্পর্কে ঠাকুরদা করেছেন কঠোর উচ্চারণ '.....পৃথিবীতে ওদের নিবার্সন দন্ড-ওদের তফাতে রেখেই চলতে হবে'। 'মুক্তধারা'-নাটকে অজ্ঞাত কূলশীল অভিজিৎ, ধনঞ্জয় বৈরাগী যন্ত্রসভ্যতার সর্বগ্রাসী ক্ষুধা থেকে কৃষি ও কৃষিকুলকে বাঁচানোর জন্যে সংগ্রাম করেছে। 'রক্তকরবী '-তে ও রঞ্জন-নন্দিনীর সংগ্রাম ও আত্মদানে স্বৈরাচারীর দন্ড ও বৈশ্যতন্ত্রের নিলর্জ্জ শোষণের সমাপ্তি এবং শুদ্র শ্রমজীবীদের জয় সূচিত হয়েছে। 'কালের যাত্রা'য় দেখি দেবতা 'মানলে কিনা শুদ্ররের টান, মেলেচ্ছের ছোঁওয়া'।

এই নটিকাটি শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের জন্মোৎসব উপলক্ষে কবির সস্নেহ উপহার। নির্যাতিত সর্বহারা শ্রেণীর প্রতি সুগভীর দরদ ও পল্লীসমাজের প্রতি অকৃত্রিম অনুরাগের জন্যই মানবতাবাদী ঔপন্যাসিক শরৎচন্দ্রকে কবি মানবরসে ঋদ্ধ এই রচনাটি উপহার দেন। 'কবির দীক্ষা'-য় শিবমন্ত্রে দীক্ষীত কবি প্রলয়সাধনায় ধর্ম-বর্ণ-অর্থের সব ভেদ ভস্ম করে সামাজিক ও অর্থনৈতিক মঞ্চ প্রতিষ্টা করে প্রাণের আনন্দ রসে সিদ্ধিলাভ করতে চান। 'রথযাত্রা'-য় লক্ষ করি, ভক্তিবাদীদের রক্ষণশীল মানসিকতা ছিন্ন ভিন্ন করে নাগরিক বলে, ''এখনকার শুদ্রেরা কেউ কেউ লুকিয়ে লুকিয়ে শাস্ত্র পড়তে আরম্ভ করেছে। ধরা পড়লে বলে, আমরা কি মানুষ নই। স্বয়ং কলিযুগ শুদ্রের কানে মন্ত্র দিতে বসেছে যে তারা মানুষ.....'' বৈশ্য ধনপতি সদলে রথ চালানোয় ব্যার্থ হয়ে উপলব্ধি করল তাদের সামলানোর বা সিন্দুকগুলো শক্ত করে বন্ধ করবার সময় এসেছে। কেননা তাঁর ভাষায় '.....আজ রথের সামনে এসে পরে আমাদের সংকট ঘটেছে আশে পাশে লোকের দাঁত কিড়মিড় অনেকদিন থেকে শুনছি।' রাজা-অমাত্য-সদাগর শ্রেণীর বেতালা টানেই মহাকালের রথ নিশ্চল ছিলো, শুদ্রের দলবদ্ধ টানেই তা গতি ও ছন্দ ফিরে পাবে। সৈনিক ও পুরোহিতের মোহ ভাঙচ্ছে, অন্ধ প্রথানুগত্যের ভিত শিথিল হয়ে আসছে ; তারা ভেতরে ভেতরে নতুন হয়ে উঠার নির্দেশ পায় কবির কাছ থেকে। 'চন্ডালিকা' নাটিকায় চন্ডালকন্যা প্রকৃতি মানুষের অধিকার নিয়েই প্রেমের দাবিদার। চন্ডালিনী সলুভ হীনমন্যতা তার নেই। সে বলে ''যে ধর্ম অপমান করে সে ধর্ম মিরে।'' 'তাসের দেশ'-এ সনাতন শাস্ত্রের শিকল ছিঁড়ে অনুশাসন অনুবর্তনের যান্ত্রিক অভ্যাস ছেড়ে শেষপর্যন্ত সবাই ভাঙ্গনের জয়গান গায়। বন্দী-প্রাণমন শুনতে পায় নতুনের ডাক।

রবীন্দ্রচেতনা সুদীর্ঘ সাধন-পর্যবেক্ষণ-মনন-চিন্তনের প্রভাবে সমৃদ্ধি ও সত্যসন্ধানী। 'চন্ডালিকার' প্রকৃতির মতোই কবিও মনের মধ্যে দেখতে পাচ্ছেন সামনে প্রলয়ের রাত্রি, মিলনের বড়, ভাঙ্গনের আনন্দ। সামাজিক বিপর্যয় ও শ্রেণীবিন্যাসের ভেতর দিয়ে শুদ্রশক্তির জাগরণ ও নেতৃত্ব গ্রহণ সম্ভব হবে । তাঁর প্রিয় বাউল চরিত্র চাষী, তাতী, খোদাইকার প্রভৃতি শ্রমজীবী শুদ্র চরিত্রের মাধ্যমে কবি তাঁর বিশ্বাসের খসড়া তৈরী করেছেন। গভীর তত্ত্ব ও মিলনের বাণী গণহৃদয়ে পরিবাহিত করার উদ্দেশ্যে কবি বাউল চাষী প্রভৃতি শ্রেণীর মানুষের মুখে দিয়েছেন গান। কবি উপলব্ধি করেন, 'বড়ো হয়ে উঠতে গেলেই, অনেকের সঙ্গে মিলতে হয়' (প্রকৃতি প্রবন্ধ) এবং বৈষম্য ও অবিশ্বাসের দুষিত সমাজ পরিবেশকে সাম্য ও প্রেমে পরিশুদ্ধ করা দরকার। অন্ত্যজ শ্রেণীর প্রতি তথাকথিত ধর্মপ্রাণ ও শিক্ষিত সম্প্রদায়ের উপেক্ষার মনোভাব দেখে ব্যথিত কবি বলেছেন -''আমি পল্লীগ্রামে গিয়া দেখিয়া আসিলাম সেখানে নমঃ শুদ্রদের ক্ষেত্র অন্যজাতিতে চাষ করে না, তাহাদের ঘর তৈরী করিয়া দেয় না - অর্থাৎ পৃথিবীতে বাঁচিয়া থাকিতে হইলে মানুষের কাছে মানুষ যে সহযোগিতা দাবি করিতে পারে আমাদের সমাজ ইহাদিগকে তাহার ও আযোগ্য বলিয়াছে; - বিনা অপরাধে আমরা ইহাদের জীবনযাত্রাকে দুরূহ ও দুঃসহ করিয়া তুলিয়া জন্মকাল হইতে মৃত্যুকাল পর্যন্ত ইহাদিগকে প্রতিদিনই দন্ড দিতেছি।''(১)

লোকসমাজে, লৌকিক ব্যবহারে মানুষ তার অত্যাচারের লাঠিটাকে ধর্মের নামে গিল্টি করে আপন মূঢ়তারই পরিচয় দেয় এবং মনুষ্যত্বকে বিনাশ করে ভয়ংকর বিদ্রোহ ও বিপ্লবকে আসন্ন করে তোলে। কৃত্রিম নিয়মে মানুষের অধিকার যুক্ত বা রুদ্ধ করবার তামসিকতায় ক্ষুদ্ধ কবি স্পষ্টভাষায় অমানবিকতার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করেন, ''.....যদি দেখিতাম কখনো বা ব্রাহ্মণ শুদ্র হইয়া উঠিতেছে তাহা হইলে ও অন্তত ইহা বুঝিতে পারিতাম এখানে মানুষের অধিকার লাভ তাহার ব্যাক্তিগত ক্ষমতার উপরেই নির্ভর করিতেছে।''(২)

যুগ যুগ যাবত বঞ্চিত এই ব্রাত্যজনেদের প্রতি গভীর মমতা ও শ্রদ্ধা পোষণের সঙ্গে সঙ্গে এই শ্রেণীর ভবিষৎ সম্পর্কে তাঁর সংশয়েরও সীমা নেই। মানুষ 'বড় আমি'র বদলে 'ছোট আমি'কে প্রশ্রয় দিলে প্রকৃত পক্ষে সবদিক থেকেই দীন হয়ে পড়ে। বলের বড়াই বিধাতা ক্ষমা করে না; শক্তির অপপ্রয়োগ ইতিহাস মেনে নেয় না। নিজেদের যে সহজাত শক্তির দৌলতে শুদ্ররা অপর তিনটি বর্ণের ওপর উঠে প্রভূত করবে সেই সৃজনক্ষম শক্তি সম্পর্কে সীমাহীন দম্ভ এবং বেপরোয়া মনোভাবই একদিন ক্ষয় লয়ের কারণ হবে। এই আশঙ্কায় উচ্চারিত হয়েছে 'রথযাত্রা' নাটিকায় কবির কণ্ঠে, ''.....একদিন ভাববে ওরাই রথের কর্তা তখনই মরবার সময় আসবে। দেখো না কালই বলতে শুরু করবে, আমাদেরই হাল লাঙল চরকা তাঁতের জয়।'' রবীন্দ্রনাথ শ্রেণীসংঘাত, বিভিন্ন বর্ণের উত্থান পতন ও সমন্বয়ের ভেতর দিয়ে সর্বহারা শ্রণীর রাজ প্রতিষ্টা ও তার বিনাশের গতি প্রকৃতি সম্পর্কে কবির ধারণা বা ভবিষৎবাণী কতখানি সত্য তা নিরুপণের সময় এখনো আসেনি; সে বিচারের দায় আগামী দিনের ইতিহাসের, তবে এখন থেকেই দেখা যাচ্ছে সমাজের ব্রাত্যজনেরা শক্তি-সম্পদ ক্ষমতার স্বাদ পেতে শুরু করার সঙ্গে সঙ্গে দেশে দেশে রাজনৈতিক আদর্শগত বিরোধ, অর্থনৈতিক বৈষম্য ও স্বার্থের সংঘাত বিহ্বল বিচ্ছিন্ন।

কবির নাট্যভাবনার আর একটি তাৎপর্যপূর্ণ দিক হলো, গাছপালাকে লোকজীবনের প্রতিরূপ

.....

(১) ধর্মের অধিকার (সঞ্চয় প্রবন্ধমালার অর্ন্তভূক্ত) রবীন্দ্রনাথ

(২) ধর্মের অধিকার (সঞ্চয় প্রবন্ধমালার অর্ন্তভূক্ত) রবীন্দ্রনাথ

হিসাবে দেখা হয়েছে। কবি মনে করেন, জীবাত্মা ঈশ্বরের প্রেমের ক্ষেত্র এবং প্রকৃতি তাঁর শক্তির ক্ষেত্র। কেন প্রানঃ প্রথমঃ প্রৈতিযুক্তং ? বা প্রাণ কার দ্বারা তার প্রথম প্রৈতী লাভ করেছে।? কেনোউপনিষদের

এই প্রশ্নের উত্তর পেয়েছেন কবি উদ্ভিদজগতের মধ্যে যেখানে মহাপ্রাণের লীলা প্রথম শুরু হয়। একদিন জোড়াসাঁকোর বাড়ির বারান্দা থেকে, ফ্রী স্কুলের বাগানের গাছগুলির পাতার ফাঁক দিয়ে সূর্যোদয় দেখে কবির স্বপ্নভঙ্গ হয়; তাঁর চোখের ওপর থেকে যেন একটা পর্দা সরে যায়, খোলা হৃদয়ে জগৎ এসে কোলাকুলি করে, আবিষ্কৃত হয় বিশ্বসংসারের অপরূপ মহিমা, আনন্দ ও সৌন্দর্য, বাড়ির সামনের রাস্তা দিয়ে যাতায়াতকারি মুটে মুজুর-মানুষদের চৈতন্য দিয়ে দেখা শুরু হয়।

দেবদারু, আম্রবন, কুরুচি, শাল, মধুমঞ্জরী প্রভৃতি গাছ লতা সম্পর্কে কবি কবিতা লেখেননি,'বনবাণী' কাব্যের ভূমিকায় 'প্রাণের আনন্দরূপ' গাছপালার তাৎপর্য বিশ্লেষণ করেছেন ,''ওই গাছগুলো বিশ্ব বাউলের একতারা, ওদের মজ্জায় মজ্জায় সরল সুরের বাঁধন, ওদের ডালে ডালে পাতায় পাতায় একতালা ছন্দের নাচন ।.....মুক্তির জন্যে প্রতিদিন যখন প্রাণ ব্যথিত ব্যাকুল হয়ে উঠে, তখন সকলের চেয়ে মনে পড়ে আমার দরজার কাছে সেই গাছগুলিকে। তারা ধরণীর ধ্যানমন্ত্রের ধ্বনি।'' প্রকৃতি পর্যায়ের গানগুলিতে তো বটেই এমনকি প্রেম ও পূজা পর্যায়ের অনেক গান গাছ লতা ফুলের উল্লেখ রয়েছে। 'শারদোৎসব'-এ কবি 'বেতসিনী'র তীরবর্তী বনে কাশ-ধান-শিউলির মাঝে স্থাপন করেছেন নাটকের পাত্র পাত্রীদের; বনের পথে যারা গেয়ে বেড়ায় :-

''.....
বনদেবীর দ্বারে দ্বারে
শুনি গভীর শঙ্খধ্বনি
আকাশবীণার তারে তারে
জাগে তোমার আগমনী।''

রাজা নাটকে আম্রবনের ভিতর দিয়ে বীথিকার ভেতর দিয়ে আগত উৎসব বালকেরা তো সুদর্শনার ভাষায়, 'মূর্তিমান কিশোর কান্ত' যারা গায় :-

' বিরহ মরুর হল আজি
.....
কার বাণী কোন সুরে তালে
মর্মরে পল্লবজালে
বাজে মম মঞ্জীর রাজি
সাথে সাথে।।'

সুদর্শনা উপলব্ধি করে ''.....হৃদয়ের ভিতরটাতে যে গহন পথের কুঞ্জবন আছে সেখানাকার ছায়ায় মধ্যে উদাস হয়ে চলে যায়।'' পরভোষ্ঠান বা প্রমোদ বনে আগুন লাগিয়ে কবি রাজা-রাণীর মিলনের দৃশ্য রচনা করেছেন বসন্ত উৎসবের শেষ খেলার মুক্ত প্রান্তরে যেখানে বনের কোলের কাছে জেগে উঠা বাতাসে শোনা যায় আলোকের গান - 'ধন্য হলো মরি মরি ধূলায় ধূসর প্রান।' 'অচলায়তন'-নাটকে পঞ্চক শোনপাংশু দর্ভক প্রভৃতি অন্তজ্য শ্রেণীর আরণ্যক জীবনে খুঁজে পেয়েছেন প্রাণের প্রাচুর্য ও আত্মার মুক্তি। পঞ্চক বলে :- ''দাদাঠাকুর, তোমার দুচোখ দিয়ে এই যে তুমি কেবল সেই বড়োকে দেখছ, তোমাকে যখন দেখি তখন তোমার সেই দেখাটিকেও আমি যেন পাই । তখন পশুপাখি গাছপালা আমার কাছে আর কিছুই ছোট থাকে না। এমনকি ওই শোনপাংশুদের সঙ্গে মাতামাতি করতেও আমার আর বাঁধে না।'

কাশ, টগর, মালতি, শেফালিকা শুভ্র সব ফুল নিয়ে 'ঋণশোধ'-এ শারদলক্ষীর আবাহন সে তো মাঠের সঙ্গে মানুষকে মিলিয়ে মুক্ত প্রাণেরই উৎসব;

'..... সোনা হয়ে যাবে সকল ভাবনা
অধার হইবে আলো ।'

'রক্তকরবীর' মকররাজও বোঝে, 'উপরের তলায় একটু খানি কাঁচা মাটিতে, ফুল ফুটছে- সেইখানে জাদুর খেলা।' ভূ-পৃষ্টের গাছ গাছালির ছায়া স্নিগ্ধ পৃথিবী থেকে স্বেচ্ছা নির্বাসিত রাজা অনুশোচনা করে, ''তৃষ্ণার দাহে এই মরুটা কত উর্বরা ভূমিকে লেহন করে নিয়েছে তাতে মরুর পরিসরটাই বাড়ছে।, ওই একটুখানি দুর্বল ঘাসের মধ্যে যে প্রান আছে তাকে আপন করতে পারছে না।'' প্রাচীন ভারতের আর্য ঋষিগণ ঈশ্বরকে বৃক্ষের সঙ্গে তুলনা করেছেন-
'বৃক্ষইবদিবি তিষ্টত্যেকস্তেনেদংপূর্ণংপুরুষেন সর্বম।' (বৃক্ষের ন্যায় আকাশে স্তব্ধ হইয়া আছেন সেই এক। সেই পুরুষে, সেই পরিপূর্ণে সমস্তই পূর্ণ।)

সমগ্র রবীন্দ্রসাহিত্যে বিশেষ করে নাটকে নদী আকাশ, মাঠ, পথের মতোই গাছপালাও বিশিষ্ট ভূমিকা গ্রহণ করেছে। নিছক দৃশ্য বা পটভূমি হিসাবে ব্যবহৃত না হয়ে বনের গাছ গাছালি মানুষের সুখ-দুঃখের শরিক হয়েছে। সবুজ গাছের সজীবতা, অরণ্যের মহামৌন মহিমা কবিকে আকৃষ্ট করে। সেই কারণেই দেখা যায় নাটকের পাত্র-পাত্রীদের সুযোগ পেলেই বা সুযোগ সৃষ্টি করে নিয়েই তিনি নিয়ে এসেছেন লোকালয় থেকে দূরবর্তী কোন বনে গাছপালার আলোছায়ায় সেখানে কেজো জগতের তাগিদ বা জটিলতা নেই, যেখানে মূক-মূখর প্রাণের ভাবোল্লাসে মুছে যায় স্থান- -কাল-পাত্রের সীমা। নাট্যভাবনা বা তত্ত্ব প্রতিষ্টার ক্ষেত্রে প্রকৃতির এই উপকরণগুলির তাৎপর্য বা আবেদন উপেক্ষণীয় নয়। কবি বলেছেন, 'এই গাছের রূপটি যে তার আনন্দ স্বরূপ সে দেখা এখনো আমাদের দেখা হয় নি - মানুষের মুখে যে তাঁর অমৃতরূর, সে দেখার এখনো অনেক বাকি ,'আনন্দরূপমৃতং' এই কথাটি যে দিন আমার এই দুই চক্ষু বলবে সেদিনেই তারা সার্থক হবে।.....তখন ঔষধি বনস্পতির কাছে আমাদের স্পর্ধা থাকবে না - তখন আমরা সত্য করেই বলতে পারব 'যোবিশ্বং ভুবনামাবিবেশ, য ঔষদিষু যো বনস্পতিষু, তস্মৈ দেবায় নমোনমঃ।'(১)

শুধু বিষয় গৌরবেই নয় ভাবসম্পদেও রবীন্দ্র নাট্য সাহিত্য সমৃদ্ধ। কবি যেমন সমাজ- শিক্ষা-কৃষি-রাজনীতিন-দর্শন-ধর্ম প্রভৃতি বিষয় অবলম্বনে নাটক বা নাট্যকাব্য রচনা করেছেন, তেমনি সমকালের ও স্বদেশের বৈষয়িক বা আত্মিক সমস্যাকে অতলান্ত অভিজ্ঞতা এবং গভীর মণীষার সাহায্যে বিশ্লেষণ করে তাকে দেশকাল পাত্রতিরিক্ত ব্যপ্তি দান করেছেন। মানুষের জৈব- মানসিক এমন কোন দ্বন্দ্ব-সমস্যা নেই যা কবির নাটকে অনালোচিত বা উপেক্ষিত। কবির বহুমুখী ও দূরবগাহ নাট্যভাবনার অন্যতম আদর্শ হলো, লৌকিক সমাজ প্রতিবেশে নাটকের আঙ্গিক রচনা করে চিরায়িত জগৎ সংসারের কল্যাণ ও সত্যের সন্ধান । শ্রেণী বিশেষের প্রতি অমূলক পক্ষপাত একদেশীদর্শীতা কবির নাট্যচেতনাকে সংকীর্ণ বা অসম্পূর্ণ করে তোলেনি। তাঁর নাটকে Idea (ভাব)-র হলে Ideal Man বা আদর্শ মানব, পরিপূর্ণ মানুষ।

এক প্রান্তে মানুষ অপর প্রান্তে দর্শন-এই দুয়ের মধ্যবর্তী গাছপালা ঘেরা প্রকৃতির অসীম আঙিনায়ই কবির রোমান্টিক চেতনা ও মানবপ্রেমের লীলাভূমি।

.....

১) দেখা (শান্তিনিকেতনে প্রবন্ধমালা)- রবীন্দ্রনাথ

.....

তথ্য সূত্র :-

১) রবীন্দ্র রচনাবলী - (জন্মশতবার্ষিক সংস্করণ) ৩,৪,৫,৬,৭,৮, ১০ খন্ড
২) রবীন্দ্র নাট্যপ্রবাহ - প্রমথনাথ বিশী
৩) রবীন্দ্র কাব্যে ভূমিকা - নীহাররঞ্জন রায়
৪) উপনিষদের ভূমিকায় রবীন্দ্রনাথ - শশীভূষণ দাশগুপ্ত

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

Search Research papers of The Indian Journal of Research Anvikshiki-ISSN 0973-9777 in the Websites given below

http://nkrc.niscair.res.in/BrowseByTitle.php?keyword=A

National Knowledge Resource Consortium

www.icmje.org

ICMJE INTERNATIONAL COMMITTEE of MEDICAL JOURNAL EDITORS

www.scholar.google.co.in

Google scholar

www.kmle.co.kr

KMLE 의학 검색 엔진
Korean medical library engine
http://www.kmle.co.kr

www.fileaway.info

File Away

www.banaras.academia.edu

Academia.edu
follow research

www.www.edu-doc.com

Edu-Doc

www.docslibrary.com

docslibrary
Search Any Document Files Over The Internet!

www.dandroidtips.com

MyCelular.ORG

www.printfu.org

pdf search engine
ARTAPP.NET

www.cn.doc-cafes.com

DOC CAFES

www.freetechebooks.com

Tech eBooks

www.google.com

Google India

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777
09739777

₹ 1000/-